



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	17-10-24	3	6-8

The Tribune

Experts discuss ways to make cultivation of spices profitable

TRIBUNE NEWS SERVICE

HISAR, OCTOBER 16

The three-day annual group meeting of the 35th All-India Coordinated Research Project on Spices started at Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU) on Tuesday.

The Deputy Director General (Horticulture) of Indian Council of Agricultural Research (ICAR) Dr SK Singh was the chief guest, while the meeting was chaired by the Vice Chancellor of the HAU Prof BR Kamboj.

Scientists from 40 All India Agricultural Research Project Centres are participating in this meeting being jointly organised by the Department of Vegetable Science of the HAU and Indian Council of Agricultural Research, Central Spices Research Institute, Kozhikode, Calicut, Kerala.

Addressing the meeting, chief guest Dr Singh said more work needs to be done on the cultivation of spices from nursery to post-production processing in the field to make the cultivation of spices more profitable. He said farmers could earn more profit than other crops by cultivating spice crops. "Farmers need to be motivated to engage in farming by forming groups with the help of farmer producers' organisa-

'NEED TO PROMOTE NATURAL FARMING'

- Scientists from 40 All-India Agricultural Research Project Centres are participating in the three-day meet.
- They were of the view that farmers could earn more profit than other crops by cultivating spice crops.
- They said natural farming should be promoted among farmers for spice cultivation.

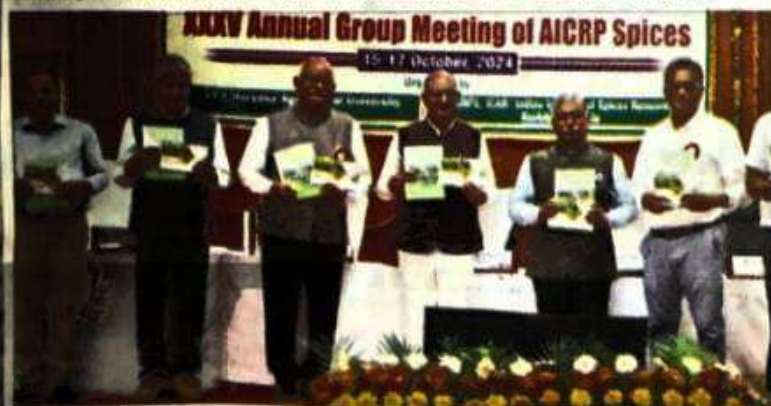
tions (FPOs). Due to changes in the climate, planning according to agro-climatic zones and cultivating improved varieties will give more benefits. He said that along with increasing production, there is also a need to improve the quality of spices so that there is no harm to health due to the use of spices," he said. The ICAR has national-level institutes of spices working in Kozhikode and Ajmer. He also called for making farmers aware to promote natural farming in spice cultivation. He said recently 109 varieties of climate change tolerant and high-yielding crops were released, which included six varieties of spice crops.

HAU Vice Chancellor Dr Kamboj said spices not only added flavour and taste to the food but also enhance its quality and medicinal values. "India is also known as the 'Land of Spices' as it

is the largest producer, consumer and exporter of spices and spice products. Indian spices are famous in the world. Out of 109 spices listed by the International Organisation for Standardisation (ISO), India produces 63 thanks to its diverse agro-climatic zones. Out of the total 63 spices grown in India, 20 are classified as seed spices whose dried seeds or fruits are used as spices and they contribute to about 45 per cent of the country's area and 18 per cent of the total spice production," he informed.

The VC also stressed the need to formulate strategies to ensure national food and nutrition security by highlighting the challenges of the spice industry, which include declining productivity, soil health issues, microbial dynamics, climate change, food safety challenges, increasing problems of adulteration in spices. It is important to adopt modern technology to increase the production of spices. He emphasised on working in coordination to deal with various challenges, including climate change.

He said the three-day deliberations will help experts from different fields to give suggestions for future studies and research initiatives in spices.



Scientists from 40 All-India Agricultural Research Project Centres are participating at



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक हिंदूस्तान	17.10.24	7	6-8

महर्षि वाल्मीकि के आदर्श, शिक्षाएं प्रेरणास्रोत : काम्बोज हकृवि में पावन प्रकट दिवस पर विचार गोष्ठी आयोजित

हिसार, 16 अक्टूबर (हप्र)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में सृष्टिकर्ता भगवान वाल्मीकि के पावन प्रकट दिवस पर मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्य अतिथि जबकि समाजसेवी स्वामी गुरुचरण विशिष्ट अतिथि तथा कृष्ण मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि महर्षि वाल्मीकि के आदर्श और शिक्षाएं मानव जीवन के लिए प्रेरणास्रोत हैं। उनके आदर्शों से हमें सच्चाई और न्याय के मार्ग पर चलने की प्रेरणा भी मिलती है। उन्होंने कहा कि वाल्मीकि जयंती का महत्व समाज में धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को स्थापित करना है। उन्होंने रामायण जैसे महान काव्य की रचना करने के साथ-साथ समाज के वंचित और पिछड़े वर्गों को शिक्षा और सामाजिक उन्नति का मार्ग दिखाया। विशिष्ट अतिथि एवं स्वामी गुरुचरण ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि न केवल एक महान कवि



चौधरी चरण सिंह कृषि विश्वविद्यालय में महिला सफाई कर्मचारियों को सम्मानित करते कुलपति एवं अन्य-हप्र

गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में समारोह गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के चौधरी रणबीर सिंह समागार में सामाजिक समरसता मंच हरियाणा के संयुक्त तत्वाधान में रामायण रचयिता एवं आदि कवि भगवान वाल्मीकि प्रकट दिवस की पूर्व संध्या पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित रहे, वहीं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के प्रो. प्रमोद कुमार कार्यक्रम के मुख्य वक्ता थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता सामाजिक समरसता मंच के प्रांतीय संयोजक ज्ञान चंद जैन ने की। इस अवसर पर विवि के सफाई कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। मुख्य वक्ता प्रो. प्रमोद कुमार ने कहा कि भगवान वाल्मीकि का ज्ञान हमारे साथ नहीं होता तो हम गहरी खाई में जीवन व्यतीत कर रहे होते।

थे बल्कि वे सामाजिक समरसता और मानवता के प्रबल समर्थक भी थे। मुख्य वक्ता कृष्ण ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि शास्त्र और शस्त्र दोनों के ज्ञाता थे। उन्होंने कहा कि हमें रामायण, महाभारत और श्रीमद

भगवत गीता का अध्ययन करना चाहिए। उन्होंने कहा कि यदि हम महर्षि वाल्मीकि के जीवन दर्शन को ठीक से जाने तो सोशल मीडिया पर फैलाई जा रही अनेक भ्रांतियां दूर हो जाती हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

पञ्जाब केसरी

दिनांक

17.10.24

पृष्ठ संख्या

3

कॉलम

6-8

हकृवि में भगवान वाल्मीकि के पावन प्रकट दिवस पर विचार गोष्ठी आयोजित

हिसार, 16 अक्टूबर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में सृष्टिकर्ता भगवान वाल्मीकि के पावन प्रकट दिवस पर मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्य अतिथि जबकि समाजसेवी स्वामी गुरुचरण विशिष्ट अतिथि तथा श्री कृष्ण मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि महर्षि वाल्मीकि के आदर्श और शिक्षाएं मानव जीवन के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं। उनके आदर्शों से हमें सच्चाई और न्याय के मार्ग पर चलने की प्रेरणा भी मिलती है। उन्होंने कहा कि वाल्मीकि जयंती का महत्व समाज में धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को स्थापित करना है। उन्होंने रामायण जैसे महान काव्य की रचना करने के साथ-साथ समाज के वंचित और पिछड़े वर्गों को शिक्षा और सामाजिक उन्नति का मार्ग दिखाया। उनकी रचनाएं भारतीय संस्कृति और साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं।

भगवान वाल्मीकि के जीवन का प्रत्येक पहलू हमें आदर्श जीवन जीने की शिक्षा देता है तथा पूरे समाज को एक शक्तिशाली समाज में परिवर्तित कर अपनी संस्कृति की रक्षा



महिला सफाई कर्मचारियों को सम्मानित करते कुलपति एवं अन्य

करने में सक्षम भी बनाता है। महर्षि वाल्मीकि अवतरित, परम ज्ञानी और महापुरुष थे। उन्होंने संस्कृत भाषा में श्लोकों की रचना करी।

उन्होंने कहा कि समस्याओं एवं सामाजिक बुराईयों के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए शिक्षा को प्रचार एवं प्रसार बहुत जरूरी है। महिला सशक्तिकरण एवं पर्यावरण संरक्षण पर जोर देते हुए उन्होंने पौधारोपण करने पर भी बल दिया। इस अवसर पर कुलपति ने 15 महिला सफाई कर्मचारियों को सम्मानित किया।

विशिष्ट अतिथि एवं समाजसेवी स्वामी गुरुचरण ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि न केवल एक महान कवि थे बल्कि वे सामाजिक समरसता और मानवता के प्रबल समर्थक भी थे। उनके समय में समाज में विभिन्न जातियों और वर्गों के बीच भेदभाव था लेकिन भगवान वाल्मीकि ने इन सभी सामाजिक बंधनों को नकारते हुए

यह दिखाया कि मानवता और धर्म सभी के लिए समान हैं उनके जीवन का यह संदेश आज भी प्रासंगिक है और समाज में समानता एकता और भाईचारे के महत्व को बढ़ाता है।

मुख्य वक्ता श्री कृष्ण ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि शास्त्र और शस्त्र दोनों के ज्ञाता थे। उन्होंने कहा कि हमें रामायण, महाभारत और श्रीमद् भगवत गीता का अध्ययन करना चाहिए। उन्होंने कहा कि यदि हम महर्षि वाल्मीकि के जीवन दर्शन को ठीक से जाने तो सोशल मीडिया पर फैलाई जा रही अनेक भ्रांतियां दूर हो जाती हैं। महर्षि वाल्मीकि के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने यह भी बताया कि अनेक महापुरुषों ने उनका अनुसरण करते हुए उनके आदर्शों पर चलने का काम किया। उन्होंने कहा कि महापुरुषों के द्वारा बताया गए मार्ग पर चलकर ही समाज एवं राष्ट्र को प्रगति के पथ पर ले जा सकते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	17.10.24	3	4-6

महर्षि वाल्मीकि के आदर्श और शिक्षाएं मानव जीवन के लिए प्रेरणास्त्रोत : प्रो. काम्बोज

जागरण संवाददाता • हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में भगवान वाल्मीकि के पावन प्रकट दिवस पर मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में विचार गोष्ठी का आयोजन किया। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज मुख्य अतिथि जबकि स्वामी गुरुचरण विशिष्ट अतिथि तथा श्रीकृष्ण मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि के आदर्श और शिक्षाएं मानव जीवन के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं। उन्होंने पौधारोपण करने पर भी बल दिया। इस अवसर पर कुलपति ने 15 महिला सफाई कर्मचारियों को सम्मानित किया।

विशिष्ट अतिथि एवं समाजसेवी स्वामी गुरुचरण ने कहा कि महर्षि



महिला सफाई कर्मचारियों को सम्मानित करते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज एवं अन्य वाल्मीकि न केवल एक महान कवि थे बल्कि वे सामाजिक समरसता और मानवता के प्रबल समर्थक भी थे। मुख्य वक्ता श्रीकृष्ण ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि शास्त्र और शस्त्र दोनों के ज्ञाता थे। हमें रामायण, महाभारत और श्रीमद् भगवत गीता का अध्ययन करना चाहिए। उन्होंने कहा कि यदि हम महर्षि वाल्मीकि के जीवन दर्शन को ठीक से जाने तो इंटरनेट मीडिया पर फैलाई जा रही अनेक भ्रान्तियां दूर हो जाती हैं। कुलसचिव एवं कार्यक्रम के आयोजक डा. पवन कुमार ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन से विश्वविद्यालय परिवार को नई ऊर्जा मिलती है। इस दौरान डा. राजेश गेरा, डा. सुभाष चन्द्र मौजूद थे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हर. मू.म	17.10.24	9	2-6

हृदय में भगवान वाल्मीकि प्रकट उत्सव पर विचार गोष्ठी आयोजित महर्षि वाल्मीकि के आदर्श, शिक्षा मानव जीवन के लिए प्रेरणास्त्रोत

कार्यक्रम में वक्ताओं ने
महर्षि वाल्मीकि के
जीवन पर डाला प्रकाश

हरिद्वीप न्यूज | हिंसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में सृष्टिकर्ता भगवान वाल्मीकि के पावन प्रकट दिवस पर मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज मुख्य अतिथि रहे जबकि समाजसेवी स्वामी गुरुचरण विशिष्ट अतिथि व कृष्ण मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि महर्षि वाल्मीकि के आदर्श और शिक्षाएं मानव जीवन के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं। उनके आदर्शों से हमें सच्चाई और न्याय के मार्ग पर चलने की प्रेरणा भी मिलती है। उन्होंने कहा कि वाल्मीकि जयंती का महत्व समाज में धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को स्थापित करना है। उन्होंने रामायण जैसे महान काव्य की रचना करने के साथ-साथ समाज के वंचित और पिछड़े वर्गों को शिक्षा और सामाजिक उत्थान के लिए



हिंसार। मुख्यातिथि कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज विचार गोष्ठी को संबोधित करते हुए व महिला सफाई कर्मचारियों को सम्मानित करते कुलपति एवं अन्य।



दिखाया।

रचनाएं अमूल्य धरोहर

उनकी रचनाएं भारतीय संस्कृति और साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं। भगवान वाल्मीकि के जीवन का प्रत्येक पहलू हमें आदर्श जीवन जीने की शिक्षा देता है तथा पूरे समाज को एक शक्तिशाली समाज में परिवर्तित कर अपनी संस्कृति की रक्षा करने में सक्षम भी बनाता है। महर्षि वाल्मीकि अवतरित, परम ज्ञानी और महापुरुष थे।

उन्होंने संस्कृत भाषा में श्लोकों की रचना की। उन्होंने कहा कि समस्याओं एवं सामाजिक बुराइयों के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार बहुत जरूरी है। महिला सशिक्षण एवं

उन्होंने पौधारोपण करने पर भी बल दिया। इस अवसर पर कुलपति ने 15 महिला सफाई कर्मचारियों को सम्मानित किया।

विशिष्ट अतिथि एवं समाजसेवी स्वामी गुरुचरण ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि न केवल एक महान कवि थे बल्कि वे सामाजिक समरसता और मानवता के प्रबल समर्थक भी थे। उनके समय में समाज में विभिन्न जातियों और वर्गों के बीच भेदभाव था लेकिन भगवान वाल्मीकि ने इन सभी सामाजिक बंधनों को नकारते हुए यह दिखाया कि मानवता और धर्म सभी के लिए समान है उनके जीवन का यह संदेश आज भी प्रासंगिक है और समाज में समानता एकता और भाईचारे के महत्व को बढ़ाता है।

मुख्य वक्ता कृष्ण ने कहा कि

दोनों के ज्ञाता थे। उन्होंने कहा कि हमें रामायण, महाभारत और श्रीमद् भगवत गीता का अध्ययन करना चाहिए।

...भातियां होती हैं दूर

उन्होंने कहा कि यदि हम महर्षि वाल्मीकि के जीवन दर्शन को ठीक से जाने तो सोशल मीडिया पर फैलाई जा रही अनेक भातियां दूर हो जाती हैं। महर्षि वाल्मीकि के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने यह भी बताया कि अनेक महापुरुषों ने उनका अनुसरण करते हुए उनके आदर्शों पर चलने का काम किया। उन्होंने कहा कि महापुरुषों के द्वारा बताए गए मार्ग पर चलकर ही समाज एवं राष्ट्र को प्रगति के पथ पर ले जा सकते हैं।

कुलसचिव एवं कार्यक्रम के

विचार गोष्ठी में आए हुए सभी का स्वागत करते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन से विश्वविद्यालय परिवार को नई ऊर्जा मिलती है। उन्होंने कहा कि महर्षि वाल्मीकि संस्कृत रामायण के प्रसिद्ध रचयिता हैं, जो आदिकवि के रूप में प्रसिद्ध हैं।

रामायण एक महाकाव्य है जो कि राम के जीवन के माध्यम से हमें जीवन के सत्य व कर्तव्य से परिचित करवाता है। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा ने विचार गोष्ठी में सभी का धन्यवाद किया। मंच का संचालन डॉ. सुभाष चन्द्र किया। इस अवसर पर विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, विभागाध्यक्ष, शिक्षक, गैर शिक्षक



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उज्ज्वल समाचार	17.10.24	6	1-5

महर्षि वाल्मीकि के आदर्श और शिक्षाएं मानव जीवन के लिए प्रेरणास्रोत : प्रो. काम्बोज

हिसार, 16 अक्टूबर (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में सृष्टिकर्ता भगवान वाल्मीकि के पावन प्रकट दिवस पर मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि जबकि समाजसेवी स्वामी गुरुचरण विशिष्ट अतिथि तथा श्रीकृष्ण मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि के आदर्श और शिक्षाएं मानव जीवन के लिए प्रेरणास्रोत हैं। उनके आदर्शों से हमें सच्चाई और न्याय के मार्ग पर चलने की प्रेरणा भी मिलती है। उन्होंने कहा कि वाल्मीकि जयंती का महत्व समाज

में धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को स्थापित करना धरोहर है। भगवान वाल्मीकि के जीवन का प्रत्येक पहलू हमें आदर्श जीवन



महिला सफाई कर्मचारियों को सम्मानित करते कुलपति व अन्य।

है। उन्होंने रामायण जैसे महान काव्य की रचना करने के साथ-साथ समाज के वंचित और पिछड़े वर्गों को शिक्षा और सामाजिक उन्नति का मार्ग दिखाया। उनकी रचनाएं भारतीय संस्कृति और साहित्य की अमूल्य

जीने की शिक्षा देता है तथा पूरे समाज को एक शक्तिशाली समाज में परिवर्तित कर अपनी संस्कृति की रक्षा करने में सक्षम भी बनाता है। महर्षि वाल्मीकि अवतरित, परम ज्ञानी और महापुरुष थे। उन्होंने संस्कृत भाषा में

श्लोकों की रचना करी। उन्होंने कहा कि समस्याओं एवं सामाजिक बुराइयों के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार बहुत जरूरी है। महिला सशिक्षण एवं पर्यावरण संरक्षण पर जोर देते हुए उन्होंने पौधारोपण करने पर भी बल दिया। इस अवसर पर कुलपति ने 15 महिला सफाई कर्मचारियों को सम्मानित किया।

विशिष्ट अतिथि एवं समाजसेवी स्वामी गुरुचरण ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि न केवल एक महान कवि थे बल्कि वे सामाजिक समरसता और मानवता के प्रबल समर्थक भी थे। उनके समय में समाज में विभिन्न जातियों और वर्गों के बीच भेदभाव था लेकिन भगवान वाल्मीकि ने इन सभी सामाजिक बंधनों को नकारते हुए यह

दिखाया कि मानवता और धर्म सभी के लिए समान है उनके जीवन का यह संदेश आज भी प्रासंगिक है और समाज में समानता एकता और भाईचारे के महत्व को बढ़ाता है।

मुख्य वक्ता श्रीकृष्ण ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि शास्त्र और शास्त्र दोनों के ज्ञाता थे। उन्होंने कहा कि हमें रामायण, महाभारत और श्रीमद् भगवत गीता का अध्ययन करना चाहिए। उन्होंने कहा कि यदि हम महर्षि वाल्मीकि के जीवन दर्शन को ठीक से जाने तो सोशल मीडिया पर फैलाई जा रही अनेक भ्रांतियां दूर हो जाती हैं। महर्षि वाल्मीकि के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने यह भी बताया कि अनेक महापुरुषों ने उनका अनुसरण करते हुए उनके आदर्शों पर चलने का काम किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उमर उजाला	17.10.24	4	7.8

महर्षि वाल्मीकि की शिक्षाएं प्रेरणास्रोत



हिसार। एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि के आदर्श और शिक्षाएं मानव जीवन के लिए प्रेरणास्रोत हैं। उनके आदर्शों से हमें सच्चाई और न्याय के मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलती है। वाल्मीकि जयंती का महत्व समाज में धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को स्थापित करना है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में सृष्टिकर्ता भगवान वाल्मीकि के पावन प्रकट दिवस पर मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कुलपति प्रो. कांबोज बतौर मुख्य अतिथि और स्वामी गुरुचरण विशिष्ट अतिथि रहे। समाजसेवी कृष्ण मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे। कुलपति ने 15 महिला सफाई कर्मचारियों को सम्मानित भी किया। इस मौके पर कुलसचिव डॉ. पवन कुमार, अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा, डॉ. सुभाष चंद्र आदि मौजूद रहे। संवाद



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सत्य कर्ष	17.10.24	6	7-8

हृदय में भगवान वाल्मीकि के पावन प्रकट दिवस पर विचार गोष्ठी आयोजित

हिसार(सच कहूँ न्यूज)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में सृष्टिकर्ता भगवान वाल्मीकि के पावन प्रकट दिवस पर मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि जबकि समाजसेवी स्वामी गुरुचरण विशिष्ट अतिथि तथा श्री कृष्ण मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि के आदर्श और शिक्षाएं मानव जीवन के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं। उनके आदर्शों से हमें सच्चाई और न्याय के मार्ग पर चलने की प्रेरणा भी मिलती है। उन्होंने कहा कि वाल्मीकि जयंती का महत्व समाज में धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को स्थापित करना है। उन्होंने रामायण जैसे महान काव्य की रचना करने के साथ-साथ समाज के वंचित और पिछड़े वर्गों को शिक्षा और सामाजिक उन्नति का मार्ग दिखाया। उनकी रचनाएं भारतीय संस्कृति और साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं। भगवान वाल्मीकि के जीवन का प्रत्येक पहलू हमें आदर्श जीवन जीने की शिक्षा देता है तथा पूरे समाज को एक शक्तिशाली समाज में परिवर्तित कर अपनी संस्कृति की रक्षा करने में सक्षम भी बनाता है। महर्षि वाल्मीकि अवतरित, परम ज्ञानी और महापुरुष थे। उन्होंने संस्कृत भाषा में श्लोकों की रचना करी। उन्होंने कहा कि समस्याओं एवं सामाजिक बुराईयों के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार बहुत जरूरी है। महिला सशिक्षण एवं पर्यावरण संरक्षण पर जोर देते हुए उन्होंने पौधारोपण करने पर भी बल दिया। इस अवसर पर कुलपति ने 15 महिला सफाई कर्मचारियों को सम्मानित किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	17-10-24	8	7-8

दैनिक भास्कर

देसी व काबुली चने की बिजाई का 15 नवंबर तक सही समय चने की अगेती बिजाई करने से बचें: डॉ. सुनील

भास्कर न्यूज़ | हिसार

हरियाणा में चने और काबुली चने की बिजाई का उपयुक्त समय है। किसान चने की बुआई के लिए खेत तैयार करें और उन्नत किस्म के बीजों का ही चयन करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि हरियाणा क्षेत्र के लिए हरियाणा चना नंबर 1 एचसी 1, हरियाणा चना नंबर 5 (एच सी 5), हरियाणा चना नंबर 6 (एच सी 6) और हरियाणा काबुली चना नंबर 2 (एच के 2) इन देसी व काबुली चने की उन्नत किस्में हैं। इन उन्नत किस्मों की बिजाई का समय 30 अक्टूबर से 15 नवंबर तक है और बीज की मात्रा 16 किलोग्राम प्रति एकड़ है। हकृवि वैज्ञानिक डॉ. सुनील कुमार ने बताया कि अगेती बिजाई कभी न करें। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि बिजाई 'पोरा' विधि से 2 खुड्डों का फासला 30 सेंमी. रखकर इस प्रकार करें कि बीज 10 सेंमी. गहरा पड़े। जहां खेत में आल की कमी हो तो 2 खुड्डों का फासला 45 सेंमी. रख कर बिजाई के समय 12 कि.ग्रा. यूरिया व 100



चने की फसल का फाइल फोटो।

फसल को दीमक से बचाएं

बाविस्टिन @ 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज का उपचार करें। 4 ग्राम ट्राइकोडरमा विरिडी (बायोडरमा) + विटैवैक्स 1 ग्राम को 5 मि.ली. पानी में लेप बना प्रयोग करें। दीमक से बचाने के लिए 850 मि.ली. मोनोक्रोटोफास 36 एसएल. या 1500 मिली. क्लोरपाइरीफॉस 20 ईसी. को पानी में मिलाकर कुल 2 लीटर घोल बनायें।

किग्रा. सुपर फास्फेट प्रति एकड़ ड्रिल करें। यदि डीएपी मिल जाये तो 34 किग्रा. डीएपी ही प्रति एकड़ बिजाई के समय बीज के नीचे ड्रिल करें। चने के बीज को राइजोबियम का टीका अवश्य लगायें और बहुत रेतिली जमीन में 10 किग्रा. जिंक सल्फेट प्रति एकड़ के हिसाब से डालें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	17.10.24	8	1-4

दैनिक भास्कर

प्रदेश में 11,420 हेक्टेयर में बोई जाती है जौ, पैदावार औसत 33.85 क्विंटल प्रति हेक्टेयर नमी वाली मिट्टी में केरा और बारानी क्षेत्रों में पोरा विधि से करें जौ की बिजाई, 40 दिन बाद करें पहली सिंचाई

यशपाल सिंह | हिसार

हरियाणा में जौ की फसल प्रदेश के सिरसा, हिसार, भिवानी, चरखी दादरी, महेंद्रगढ़, रेवाड़ी, जींद, रोहतक व गुरुग्राम जिले में उगाई जाती है। हरियाणा में जौ की फसल 11,420 हेक्टेयर एरिया में बोई जाती है। जौ की पैदावार 33.85 क्विंटल प्रति हेक्टेयर औसतन होती है। हरियाणा कृषि विवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि बारानी एरिया में फसल बुवाई का समय 15 अक्टूबर से 15 नवंबर के बीच उत्तम है। पहली सिंचाई 40 से 50 दिनों के बाद और दूसरी बुवाई के

बीएच 902 और 946 हैं अधिक पैदावार वाली किस्में

दर बुवाई की स्थिति में 6 पंक्ति वाले जौ के लिए 35 किलोग्राम प्रति एकड़ और देर से बुवाई की स्थिति के लिए 45 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से उपयोग करें। दो पंक्ति वाले जौ के लिए 40 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से उपयोग करें। छह कतार वाली किस्म बीएच 75 से 16 क्विंटल, बीएच 393 से 19 क्विंटल, बीएच 902 से 20, बीएच 946 से 21 और दो कतार वाली किस्म-बीएच 885 20 क्विंटल प्रति एकड़ है।



80-85 दिनों के बाद करनी चाहिए। अनुसंधान विभाग के निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि यदि मिट्टी में पर्याप्त नमी हो तो जौ की फसल को केरा विधि से बोना चाहिए। बारानी क्षेत्रों में जहां नमी की कमी

हो, वहां पोरा विधि का इस्तेमाल कर बुआई की जाती है। समय पर बोई गई फसल के लिए 22 सेंटीमीटर और देर से बोई गई फसल के लिए 18 से 20 सेंटीमीटर लाइन से लाइन की दूरी सबसे अच्छे परिणाम देती है।

इन बातों का भी रखें ध्यान

गेहूं और जौ अनुभाग के प्रभारी डॉ. करमल सिंह ने बताया कि 6 पंक्ति वाले जौ में 24 किलो नाइट्रोजन, 12 किलो फास्फोरस और 6 किलो पोटाश प्रति एकड़ सिंचित स्थिति में और 12 किलो नाइट्रोजन, 6 किलो फास्फोरस असिंचित स्थिति में डालें। दो पंक्ति वाले में 32 किलो नाइट्रोजन, 16 किलो फास्फोरस और 8 किलो पोटाश प्रति एकड़ डालें। खरपतवारों को कम करने के लिए पहली सिंचाई के बाद एक या दो बार निराई-गुड़ाई करनी चाहिए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

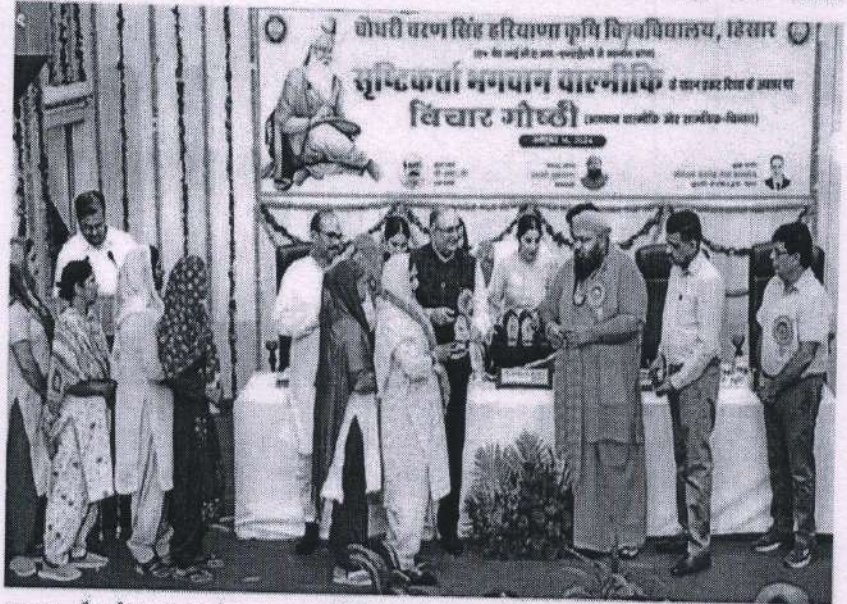
समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	17.10.2024	---	--

महर्षि वाल्मीकि के आदर्श और शिक्षाएं मानव जीवन के लिए प्रेरणास्त्रोत : प्रो. बी.आर. काम्बोज

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में सृष्टिकर्ता भगवान वाल्मीकि के पावन प्रकट दिवस पर मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्य अतिथि जबकि समाजसेवी स्वामी गुरुचरण विशिष्ट अतिथि तथा श्री कृष्ण जी मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि महर्षि वाल्मीकि के आदर्श और शिक्षाएं मानव जीवन के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं। उनके आदर्शों से हमें सच्चाई और न्याय के मार्ग पर चलने की प्रेरणा भी मिलती है। उन्होंने कहा कि वाल्मीकि जयंती का महत्व समाज में धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को स्थापित करना है। उन्होंने रामायण जैसे महान काव्य की रचना करने के साथ-साथ समाज के वंचित और पिछड़े वर्गों को शिक्षा और सामाजिक उन्नति का मार्ग दिखाया। उनकी रचनाएं भारतीय संस्कृति और साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं। भगवान वाल्मीकि के जीवन का प्रत्येक पहलू हमें आदर्श जीवन जीने की शिक्षा देता है तथा पूरे समाज को एक

शक्तिशाली समाज में परिवर्तित कर अपनी संस्कृति की रक्षा करने में सक्षम भी बनाता है। महर्षि वाल्मीकि अवतरित, परम ज्ञानी और महापुरुष थे। उन्होंने संस्कृत भाषा में श्लोकों की रचना करी। उन्होंने कहा कि समस्याओं एवं सामाजिक बुराईयों के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार बहुत जरूरी है। महिला सशक्तिकरण एवं पर्यावरण संरक्षण पर जोर देते हुए उन्होंने पौधारोपण करने पर भी बल दिया। इस अवसर पर कुलपति ने 15 महिला सफाई कर्मचारियों को सम्मानित किया। विशिष्ट अतिथि एवं समाजसेवी स्वामी गुरुचरण ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि न केवल एक महान कवि थे बल्कि वे सामाजिक समरसता और मानवता के प्रबल समर्थक भी थे। उनके समय में समाज में विभिन्न जातियों और वर्गों के बीच भेदभाव था लेकिन भगवान वाल्मीकि ने इन सभी सामाजिक बंधनों को नकारते हुए यह दिखाया कि मानवता और धर्म सभी के लिए समान है उनके जीवन का यह संदेश आज भी प्रासंगिक है और समाज में समानता एकता और भाईचारे के महत्व को बढ़ाता है। मुख्य वक्ता श्री कृष्ण जी ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि शास्त्र और शस्त्र दोनों के ज्ञाता थे। उन्होंने कहा कि हमें रामायण,



महाभारत और श्रीमद् भगवद् गीता का अध्ययन करना चाहिए। उन्होंने कहा कि यदि हम महर्षि वाल्मीकि के जीवन दर्शन को ठीक से जाने तो सोशल मीडिया पर फैलाई जा रही अनेक भ्रांतियां दूर हो जाती हैं। महर्षि वाल्मीकि के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने यह भी बताया कि अनेक महापुरुषों ने उनका अनुसरण करते हुए उनके आदर्शों पर चलने का काम किया। उन्होंने कहा कि

महापुरुषों के द्वारा बताए गए मार्ग पर चलकर ही समाज एवं राष्ट्र को प्रगति के पथ पर ले जा सकते हैं। कुलसचिव एवं कार्यक्रम के आयोजक डॉ. पवन कुमार ने विचार गोष्ठी में कहा कि इस प्रकार के आयोजन से विश्वविद्यालय परिवार को नई ऊर्जा मिलती है। उन्होंने कहा कि महर्षि वाल्मीकि संस्कृत रामायण के प्रसिद्ध रचयिता हैं, जो आदिकवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। रामायण एक महाकाव्य है

जो कि राम के जीवन के माध्यम से हमें जीवन के सत्य व कर्तव्य से परिचित करवाता है। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा ने सभी का धन्यवाद किया। मंच का संचालन डॉ. सुभाष चन्द्र किया। इस अवसर पर विभिन्न महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, विभागाध्यक्ष, शिक्षक, गैर शिक्षक कर्मचारी उपस्थित रहे।